

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

के तत्वाधान में

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, एम्स

जोधपुर द्वारा आयोजित

9वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की रिपोर्ट

पहला दिन (16.01.2020)

9वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आरंभ डॉ कुलदीप सिंह, डीन अकादमिक, एम्स, जोधपुर, डॉ वेद प्रकाश दूबे, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली, डॉ अरविन्द सिन्हा, एम्स, जोधपुर, श्री एन. आर. विश्वोई, उप-निदेशक, एम्स, जोधपुर, डॉ प्रवीण शर्मा, एम्स, जोधपुर, डॉ सुराजित घटक, एम्स, जोधपुर, श्री मनीष श्रीवास्तव, रजिस्ट्रार, एम्स, जोधपुर ने दीप प्रज्वलन और माँ सरस्वती की वंदना स्तुति से किया।



डॉ कुलदीप सिंह, डॉ. प्रवीण शर्मा, श्री एन. आर. विश्वोई, डॉ. वेद प्रकाश दूबे, श्री मनीष श्रीवास्तव द्वीप प्रज्वलित करते हुए



सरस्वती वंदना करते हुए संस्थान की छात्राएं

माँ सरस्वती वंदना स्तुति के बाद डॉ कुलदीप सिंह ने नौवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं जोधपुर, एम्स में प्रथम राजभाषा सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से आए हुए समस्त प्रतिभागियों का स्वागत किया।

डॉ कुलदीप ने कहा कि हिन्दी देश भर में सबसे ज्यादा समझी और बोली जाने वाली भाषा है। सहजता इसकी जान है इसलिए भारत सरकार अपने प्रशासनिक नियंत्रण वाले कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरन्तर प्रयासरत रही है। डॉ कुलदीप ने कहा कि एम्स जैसे तकनीकी संस्थान में भी इसे यथासंभव बढ़ावा देने की बात और इसी प्रत्यन के तहत ऐसे आयोजन की शुरुआत की जा रही है।

हिन्दी अपने आप में तमाम भाषाओं के शब्द समेटे हुए है इसलिए कमोबेश देश के सभी हिस्सों में यह समझी और बोली जाती है। हिन्दी बढ़ेगी तो देश बढ़ेगा, हिन्दी बढ़ेगी तो एकता बढ़ेगी, हिन्दी बढ़ेगी तो आम जन मानस में देश की विविधता की समझ बढ़ेगी, हिन्दी बढ़ेगी तो हमारे भीतर साहित्य की संवेदनाओं के नए द्वार खुलेंगे। डॉ कुलदीप ने यह भी कहा कि हिन्दी के संवैधानिक भाषा के बावजूद भी ऐसे बहुत कम लोग हैं जो दूसरी भाषा के शब्दों का प्रयोग किए बिना धाराप्रवाह हिन्दी बोल सकें। लोग विशाल संख्या की दृष्टि से हिन्दी से अक्षुण्ण रहने की बात करते हैं लेकिन व्यावहारिक रूप से हम देखते हैं कि बोलचाल के नाम पर, मीडिया तक में जिस पर लोगों को जागरुक करने की भी जिम्मेदारी है अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी को प्रशय देने का प्रचलन बढ़ रहा है।

डॉ कुलदीप ने आशा व्यक्त की कि सम्मेलन में उपरोक्त सभी विषयों पर सार्थक चर्चा होगी। राजस्थान मूलतः हिन्दी भाषी राज्य है और मेरे सहकर्मि भी अधिकतर हिन्दी भाषा-भाषी ही हैं। डॉ कुलदीप ने विश्वास जताया कि यह सम्मेलन हिन्दी में काम करने के लिए एक प्रेरणा सिद्ध होगा। मुझे इस बात का भी यकिन है कि तीन दिवसीय इस आयोजन में आमंत्रित अतिथियों एवं वक्तव्यों से सभी लाभान्वित होंगे और हिन्दी में कामकाज के प्रति अभिरुचि में भी उनकी वृद्धि होगी। जोधपुर सूर्य नगरी है हिन्दी के कई साहित्यकार, लेखक,

विश्लेषक नक्षत्र इस शहर ने दिए हैं। डॉ कुलदीप ने आशा व्यक्त की कि जोधपुर हिन्दी के प्रयोग में बढ़ावा देने में हमेशा प्रयासरत रहेगा और एम्स, जोधपुर में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन इस कड़ी में पहला आयोजन है।

डॉ कुलदीप के बाद डॉ वेद प्रकाश दूबे ने सभी लोगों का स्वागत किया और कहा कि सरलता, सहजता, ईमानदारी, परिश्रम, चिन्तन की जो धारा जोधपुर में बह रही है वह निश्चित रूप से राजस्थान और भारत का गौरव है। डॉ दूबे ने कहा कि जब हम विश्व के समक्ष खड़े होते हैं तो हमारे डीएनए में जबरदस्ती डाली गई हीन भावना हमारे साथ चलती है। हम अपने आप को भारतीय समझें, सर्वोत्कृष्ट भारतीय समझें, सर्वोत्तम भारतीय समझें। इंडिया से भारत, इंडियन से भारतीय इस सम्मेलन का मूल स्वर है। हम सर्वोत्कृष्ट भारतीय हैं, सर्वोत्कृष्ट भारतीय रहेंगे। डॉ दूबे ने ब्राह्मण्ड कुटुम्बकम की भावना को बढ़ाने पर बल दिया। डॉ दूबे ने इस बात पर भी जोर दिया कि हम सभी भारतीयों को अपने राज्य से इतर दूसरे राज्यों की भाषाओं को भी सीखना चाहिए जिससे हम अन्य राज्यों के साहित्य को भी भली-भाँति समझ सकेंगे और एकता की भावना और मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि *“परिन्दों को मंजिल मिलेगी यकीनन, ये उनके फैले हुए पंख बोलते हैं, जो लोग रहते हैं खामोश अक्सर, जमाने में उनके हुनर बोलते हैं”*। डॉ दूबे ने सभी प्रतिभागियों से अपने सार्थक विचार रखने के लिए सभी को आमंत्रित किया और सभी का स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर पुनः स्वागत एवं अभिन्नदान किया।

देश के विभिन्न संस्थानों से आए सभी प्रतिभागियों ने अपना-अपना परिचय दिया। प्रतिभागियों में भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद, दिल्ली से आए श्री एस. पी. सिंह ने अपनी बात इस शायरी के माध्यम से कही-

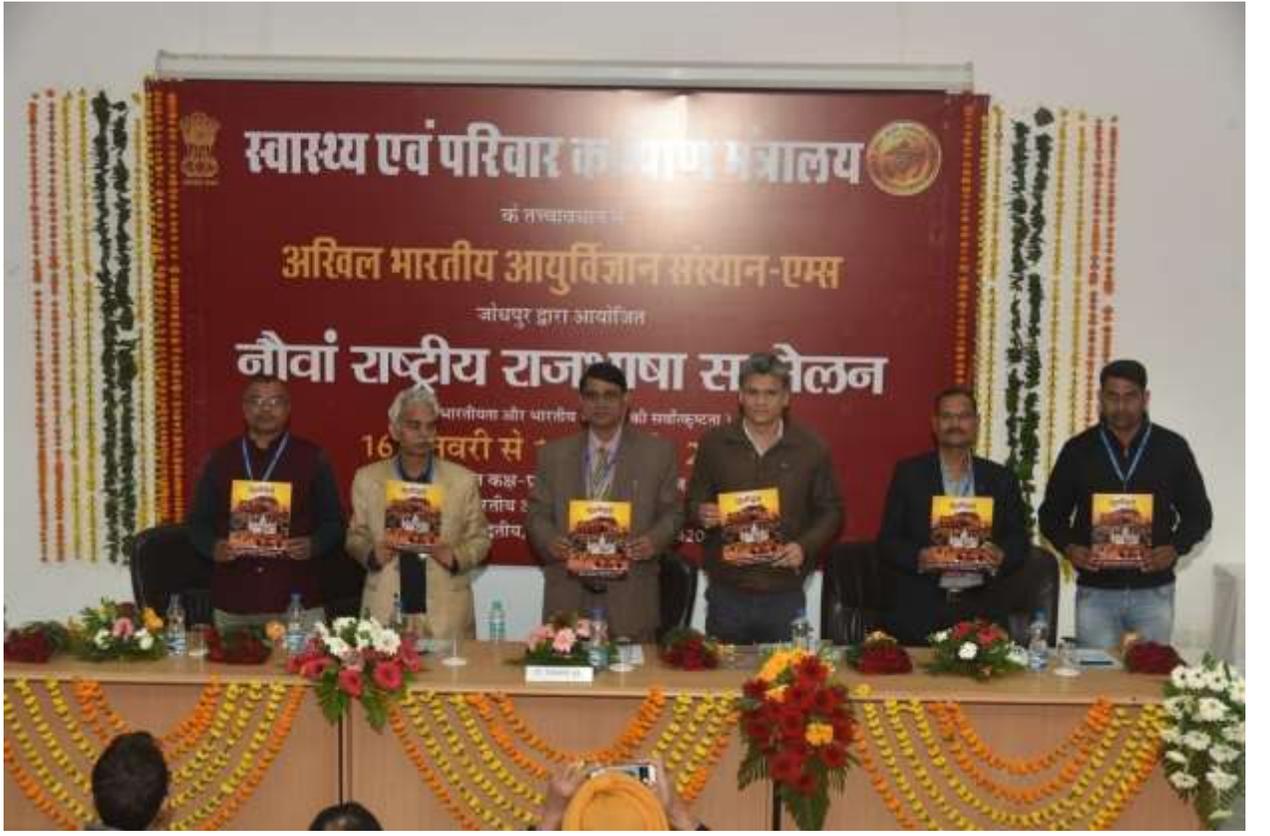
*“वन एक, पक्षी अनेक, पर सबका ठिकाना एक है,
सबकी भाषाएं अलग-अलग पर तराना एक है,
हम शिकारी भिन्न हैं पर हमारा निशाना एक है, और
दिल में हो अगर प्यार तो सारा जमाना एक है।*

डॉ दूबे ने कहा कि हम सभी भारतीयों को अन्य राज्यों की भाषाओं को भी सीखना चाहिए जिससे हमें अन्य राज्यों की सभ्यता एवं संस्कृति को जानने का मौका मिलेगा और देश की एकता एवं अखण्डता को बढ़ावा मिलेगा”।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की कार्यप्रणाली—श्री राम सुशील सिंह, वरिष्ठ राजभाषा

अधिकारी, उत्तर-पश्चिम रेलवे जोधपुर

श्री राम सुशील सिंह, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, उत्तर-पश्चिम रेलवे, जोधपुर ने अपने विचार सम्मेलन में रखे। श्री सुशील सिंह ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकाश) पर चर्चा की। श्री सुशील सिंह ने बताया कि नराकाश बैठक में कार्यालय अध्यक्ष का उपस्थित होना अनिवार्य है। श्री सुशील ने सभी प्रतिभागियों से अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने की अपील की और कहा कि अपने सहकर्मियों को भी हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित करें। श्री सुशील ने बताया कि वह अपने कार्यालय में एक वार्षिक पत्रिका “सूर्योदय” का प्रकाशन करवाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जोधपुर, एम्स भी अपने शोध हिन्दी में प्रकाशित करवाएं जिससे आम जन तक भी जानकारी मिल सके। श्री सुशील ने कार्यालयों आम बोलचाल की भाषा को बढ़ावा देने पर भी बल दिया।



उत्तर-पश्चिम रेलवे, जोधपुर द्वारा प्रकाशित पत्रिका सूर्योदय का विमोचन

मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में मातृभाषा का योगदान- डॉ. वेद प्रकाश दूबे

डॉ. वेद प्रकाश दूबे ने मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में मातृभाषा के योगदान पर चर्चा की। डॉ. दूबे ने बताया कि देशभाषियों को मातृभाषा की जितनी अच्छी समझ होगी उस देश के नागरिक उस देश की सभ्यता एवं संस्कृति को उतनी ही अच्छी तरह से समझ सकते हैं। मातृभाषा के विकास के लिए हमें अपने बच्चों को शुरू से ही जागरुक करना चाहिए जिससे की बच्चे आगे जीवन में भी मातृभाषा के महत्व को समझ सकें और मानव सभ्यता एवं संस्कृति में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सकें।

डॉ दूबे ने आगे कहा कि अंग्रेजी हम पर थोपी गई है। हिन्दी किसी की मोहताज नहीं है। हिन्दी बढ़ती आई है और बढ़ती जाएगी।



डॉ. वेद प्रकाश दूबे, निदेशक राजभाषा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार व्याख्यान देते हुए

चिकित्सा विज्ञान में हिंदी का प्रयोग- डॉ. जयकरण चारण, सह-आचार्य, औषध विज्ञान विभाग, एम्स जोधपुर

डॉ. जयकरण ने इस बात पर जोर दिया कि जिस प्रकार यूरोप, चीन, जापान एवं अन्य देशों में चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई वहाँ की स्थानीय भाषा में होती है उसी प्रकार भारत में भी चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई हिन्दी में हो सकती है जो कि समाज के सभी तबकों के लिए बहुत लाभदायक होगी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि छोटे स्तर पर भी चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई को हिन्दी भाषा में लागू करने से धीरे-धीरे इस दिशा में परिवर्तन आना शुरू हो जाएगा।



डॉ. जयकरण चारण व्याख्यान देते हुए

उन्होंने बताया कि एक चिकित्सक को अपने मरीजों को सही तरह से जानने के लिए मरीजों की स्थानीय भाषा का जानना बहुत जरूरी है। इसी प्रकार यदि चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई भी हमारी अपनी भाषा हिन्दी में होगी तो यह भारत के सभी वर्गों के लिए बहुत लाभदायक होगी।

दाँतों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता एवं उपचार – डॉक्टर सुलभ ग्रोवर, दंत चिकित्सा विशेषज्ञ

डॉ. सुलभ ग्रोवर ने बताया कि दाँतों के प्रति जागरूकता में कमी कितनी खतरनाक साबित हो सकती है। डॉ. ग्रोवर ने दाँतों की कई तरह की बीमारियों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि जागरूकता के जरिए ही लोगों को गंभीर बीमारियों से बचाया जा सकता है। उसके लिए यह भी जरूरी है कि लोगों को स्वयं भी जागरूक होना पड़ेगा और समय-समय पर चेक-अप कराना जरूरी है जिससे पता चलता रहे कि उनके दाँत अच्छी हालत में हैं।



डॉक्टर सुलभ ग्रोवर व्याख्यान देते हुए

डॉ. ग्रोवर ने बताया कि मुँह में दाँत बहुत आवश्यक हिस्सा है जो कि हमारे भोजन को चबाने के लिए बहुत आवश्यक है। क्योंकि अगर मुँह में दाँत नहीं होंगे तो हम भोजन का आनन्द अच्छे से नहीं ले पाएंगे और उस भोजन को हम टुकड़ों में तोड़ नहीं पाएंगे। हमारे शरीर के सबसे अहम हिस्सा मुँह है यदि मुँह के किसी भी अंग में कोई परेशानी होती है तो वह हमारे पूरे शरीर को परेशानी होती है।

अतः डॉ. ग्रोवर ने इस बात पर जोर दिया कि शरीर के सभी अंगों के प्रति व्यक्ति को जागरुकता रखनी चाहिए और समय-समय पर चिकित्सक से सलाह लेते रहने चाहिए जिससे भविष्य में गंभीर बीमारी से बचा जा सके।

दूसरा दिन (17.01.2019)

श्रीमती कल्पना नेगी, एफएसएसएआई, नई दिल्ली ने अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है फिर भी हमको बताना पड़ता है कि हिन्दी हमारी मातृभाषा एवं राजभाषा है। श्रीमती नेगी ने कहा कि बच्चों को शुरू से ही हिन्दी के प्रति एक सकारात्मक रवैया अपनाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जो भाषा का बीज है वह बच्चों में बचपन से ही डाला जाना चाहिए जिससे की बच्चों की भाषा के प्रति ज्यादा लगाव होगा।



डॉ पंकज भारद्वाज, एम्स, जोधपुर- संतुलित आहार एवं जीवन शैली में बदलाव

डॉ. भारद्वाज ने अपने वक्तव्य में संतुलित आहार एवं संतुलित जीवन शैली के महत्व पर बल दिया। उन्होंने बताया कि किस तरह से एक संतुलित आहार एवं संतुलित जीवन शैली द्वारा मनुष्य अच्छे और स्वस्थ जीवन का आनन्द ले सकता है। उन्होंने बताया कि भारत में ज्यादातर लोग कुपोषण के शिकार है। कुपोषण भी दो प्रकार के- पहला- जो पर्याप्त खा नहीं पाते, दूसरा- जो पर्याप्त खा पाते हैं परन्तु वह नहीं खा पाते जो शरीर के लिए आवश्यक है। इन दोनों प्रकार के कुपोषण पर डॉ. भारद्वाज ने बताया।



डॉ पंकज भारद्वाज व्याख्यान देते हुए

डा. भारद्वाज ने अपने दिने के 24 घण्टों को तीन भागों में 8x3 में बांटने की सलाह दी। 8 घण्टे सोना, 8 घण्टे काम, 8 घण्टे जीवन की अन्य आवश्यक गतिविधियां। इस प्रकार हम एक संतुलित जीवन शैली को अपने जीवन में अपना सकते हैं।

डॉ. भारद्वाज ने अपने भोजन में आवश्यक पोषक तत्व वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, खनिज लवण आदि को शामिल करने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि सभी पोषक तत्वों का आवश्यक मात्रा में भोजन में शामिल होना जरूरी है।

डॉ. भारद्वाज ने इस बात पर भी जोर दिया कि अपनी रसोई में तीन सफेद चीज नमक, चीनी, मैदा का कम होना चाहिए जो कि एक स्वस्थ जीवन आहार का संकेतक है और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने में सहायक है।

डॉ. सुलभ ग्रोवर- एटिओलॉजी और मुख कैंसर की रोकथाम

डॉ. ग्रोवर ने बताया कि हम केवल अच्छा खाने मात्र से ही बामारियों से ही दूर नहीं रह सकते बल्कि हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे शरीर को किस खाद्य पदार्थ की जरूरत है वह आवश्यक मात्रा में न मिले तो वह भोजन हमें बीमारियों से दूर रखने में मदद नहीं कर सकता।

डॉ. ग्रोवर ने मुख कैंसर- कारण एवं लक्षणों के बारे में बताया। डॉ. ग्रोवर ने बताया कि हमें अपने मुँह की साफ-सफाई रखना बहुत जरूरी है क्योंकि हमारे शरीर में जो भी खाना जाता है वह मुँह के जरिए ही जाता है। अः अगर मनुष्य का मुँह साफ है तो मुख कैंसर होने के खतरे कम है और यदि जो व्यक्ति मुँह साफ नहीं रखते उन्हें मुख कैंसर होने का खतरा बहुत ज्यादा होता है।

डॉ. गोवर ने यह भी बताया कि मुँह कैंसर में तंबाकू, धूम्रपान, शराब पाने एवं आयु मुख्य कारण है। जो लोग तंबाकू मुँह में रखकर खाते हैं उन्हें मुख कैंसर होने का कारण अधिक होता है। धूम्रपान, शराब, पराबैंगनी किरणें, कुपोषण आदि भी मुख कैंसर के प्रमुख कारणों में से हैं।

डॉ. गोवर ने इस बात पर जोर दिया कि इन सभी बातों की जागरूकता से ही मुख कैंसर जैसी घातक बीमारी से बचा जा सकता है।

डॉक्टर चंद्रभूषण त्रिपाठी, विशेष सचिव, लोक निर्माण विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार- ब्रह्माण्ड में व्याप्त ध्वनि, ऊर्जा एवं क्वांटा का भाषाओं के निर्माण में योगदान।



डॉक्टर चंद्रभूषण त्रिपाठी, विशेष सचिव, लोक निर्माण विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार व्याख्यान देते हुए

डॉक्टर चंद्रभूषण त्रिपाठी ने ब्रह्माण्ड में व्याप्त ध्वनि, ऊर्जा एवं क्वांटा का भाषाओं के निर्माण में योगदान विषय पर चर्चा की। डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि ब्रह्माण्ड में व्याप्त छोटी-छोटी ध्वनि ही आगे विशाल रूप लेती है और वह धीरे-धीरे भाषा का रूप ले लेती है। डॉ. त्रिपाठी ने शब्दों के उच्चारण का हमारे मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि हमारे वेदों में जो श्लोक लिखे हुए हैं उनका ब्रह्माण्ड में बहुत बड़ा योगदान है। हमारे वेदों, पुराणों में जो श्लोक लिखे हुए हैं उनके उच्चारण से ब्रह्माण्ड में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और मानव को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं।

डॉ. त्रिपाठी ने महामृत्युंजय मंत्र का उदाहरण दिया। उन्होंने बताया कि इस बार आरएमएल अस्पताल, दिल्ली में इस बात का प्रयोग किया गया। आईसीयू में भर्ती 40 मरीजों पर इस बात का प्रयोग किया गया। 40 मरीजों को 20-20 के दो भागों में बांट दिया गया। जिन 20 मरीजों पर महामृत्युंजय मंत्र का प्रयोग किया गया उनका परिणाम बेहद ही आश्चर्यजनक था। जो कि इस बात का प्रमाण है कि हमारे वेद, पुराणों और ग्रंथों में लिखे गए श्लोकों के उच्चारण से अत्यन्त सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है।

डॉ. त्रिपाठी के वक्तव्य के बाद सभी लोगों को संस्थान की ओर से स्मृति चिह्न एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए एवं श्री मनीष श्रीवास्तव, रजिस्ट्रार, एम्स, जोधपुर के वक्तव्य के अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।



भारत सरकार की ओर से डॉ. चन्द्रभूषण त्रिपाठी को सम्मान पत्र प्रदान करते हुए एम्स जोधपुर के रजिस्ट्रार श्री मनीष श्रीवास्तव



डॉ. सुलभ ग्रोवर को भारत सरकार की ओर से डॉ. चन्द्रभूषण त्रिपाठी सम्मान पत्र प्रदान करते हुए



एम्स, जोधपुर की ओर से डॉ. वेदप्रकाश दूबे, निदेशक राजभाषा को सम्मान पत्र प्रदान करते हुए विशेष सचिव, लोक निर्माण विभाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश सरकार



मंत्रालय के प्रतिनिधि श्री आशीष कुमार को एम्स, जोधपुर की ओर से सम्मान पत्र प्रदान करते हुए विशेष सचिव, लोक निर्माण विभाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश सरकार



मंत्रालय के प्रतिनिधि श्री प्रकाश सती को डॉ. चन्द्रभूषण त्रिपाठी सम्मान पत्र प्रदान करते हुए



श्री मनीष श्रीवास्तव, रजिस्ट्रार, एम्स, जोधपुर द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव देते हुए

सम्मेलन के अंत में सभी प्रतिभागियों द्वारा भारत, भारतीयता और भारतीय भाषाओं की सर्वोत्कृष्टता को विश्व स्तर पर स्थापित करने की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ते रहने का संकल्प लिया गया।



समापन पर राष्ट्रगान का पाठ करते हुए अतिथि



समापन के बाद देश भर से आए प्रतिभागियों के साथ सामूहिक चित्र

दो दिवसीय कार्यक्रम की सचित्र झलकियाँ

















एम्स जोधपुर का बहुत-बहुत आभार प्रकट किया जाता है।

जय हिंद, जय भारत।